ANNUAL SECONDARY EXAMINATION, 2012

HINDI (हिन्दी)

समयः 3 घण्टे] **SET-A** **[पूर्णांक: 100**

सामान्य निर्देश :

1. इस प्रश्न पत्र के चार खण्ड हैं यथा क, ख, ग एवं घ। चारों खण्डों से सभी प्रश्न अनिवार्य है।

2. प्रश्नों के उत्तर प्रश्नों के साथ दिए गए निर्देश के आलोक में ही लिखें।

3. 1 अंक के प्रश्नों का उत्तर प्रत्येक एक शब्द या एक वाक्य में, 2 अंक के प्रश्नों के उत्तर प्रत्येक लगभग 40 शब्दों में, 3 अंक के प्रश्नों के उत्तर प्रत्येक लगभग 60 शब्दों में, 4 अंक के प्रश्नों का उत्तर प्रत्येक लगभग 80 शब्दों में, 5 अंक के प्रश्नों के उत्तर प्रत्येक लगभग 100 शब्दों में एवं 10 अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 200 शब्दों में लिखें।

खण्ड क : अपठित गद्यांश (20 अंक)

प्रश्न 1. नीचे दिये गये गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

और वह कंडे की आगी में कोई चीज भून रहा है।

सामने तीन बकरियों, जिनमें से एक के मोटे थन से एक पठेरु लटक रही, थोड़ी दूर पर एक गाय चर रही और एक बछवा गर्दन को पेट में घुसेड़े सो रहा। दाहिनी ओर एक बुढ़िया घास छील रही और वह कंडे की आगी में कोई चीज भून रहा है।

पूरवा हवा आग की धधक को रह-रहकर बढ़ा देती है। वह लकड़ी की कंडे पर रखी चीज को उलट-पलट कर देता है। आग की दाह से चेहरा झुलस रहा है उसका, लेकिन उस पर उल्लास ही उल्लास नाच उठता है रह-रह कर। वह बड़े प्रेम से कंडे की आगी में कोई चीज भून रहा है जो।

दूर पर कई खेतों में हल चलाये जा रहे हैं, और ढोरों का एक बड़ा झुंड ऊपरत्ली धरती में चर रहा हैं। नदी कछार के झौए के वन में, हिलोर है, हहास है। अभी एक बटेर फुर से उड़ गयी है, हवा के तेज पंखों की आरी से चीरती-सी गाँव की धुँधली

छाया की पृष्ठभूमि में दो ताड़ के पेड़ गवाँन्नत मस्तक उठाए झूम रहे हैं और वह बड़े जतन के कंडे की आगी में कोई चीज भून रहा है।

सूखे हुए नाले में एकाकी बगूला उपवास खड़ा है। कटे हुए गेहूँ के खेत में शून्यता ही शून्यता है और वह बड़े जतन के कंडे की आगी में कोई चीज भून रहा है।

यही दस साल का होगा वह। प्रकृति ने कैसा क्रूर मजाक किया है, उसके चेहरे से, न रंग न रूप, काला भूत। निकला हुआ पेट मानो उसकी शाश्वत बुभूक्षा का डंका पीट रहा है। सूखी टांगों को फैलाये, मोटे ओठों से लार टपकाता, भद्दी उँगलियों से वह कंडे की आगी में कोई चीज भून रहा है।

अभी सड़क से बस गुजरी है- खचाखच भरी हुई। एक भारी भरकम सेठ-दम्पत्ति, कम उम्र रिक्शेवाला का कचूमर निकालते, वह चले जा रहे हैं। बैलगाड़ी पर ऊँघते गाड़ीवान के मुँह से विरहा की कड़ी टूट-टूट कर रह जाती है। सड़क पर इतने लोग क्यों चलते हैं और सबके पैर इतनी तेजी से क्यों उठा करते हैं? क्या शहर में लड्डू बँटतें हैं? बँटा करें-वह तो कंडे की आगी पर कोई चीज भूनने में ही मग्न है।

चीज शायद भुन गई। लार पतली होकर चू-चू पड़ती है। कंडे से निकली चीज को वह तलहथी पर लेता है। तलहथी जल रही है, किन्तु इस नायाब चीज को फेंके कैसे? वह मुँह में रख लेता है। किन्तु इतनी गर्मी जीभ को भी बर्दाश्त नहीं। दो बार एक मुँह खोलकर, हवा लेने की कोशिश करता है किन्तु कंडे की आगी में भुनी हुई चीज की आग कम नहीं हो रही। क्या थूक दें? नहीं-नहीं-यह भूल उससे नहीं होगी। वह निगलने की कोशिश कर रहा है।

काली पेशानी पर पसीना-पसीना है, साँस फूल रही है, कंठ झुलस रहा है, नाक में सौंधी गंध है, मन में साँय-साँय आवाज! जीभ का पानी कहाँ सूख गया कम्बख्त? वह निगले तो कैसे-उगले तो कैसे? आँखों में अब पानी ही पानी है- वह पानी जीभ पर क्यों नहीं आता ?

अभी-अभी एक चील सर के ऊपर मँडराकर चली गयी है और दो कौवे उसके सामने काँव-काँव करते, अपनी हिस्सेदारी की याद उसे दिला रहे हैं और वह कंडे की आगी में भुनी हुई उस नायाब चीज को जैसे-तैसे निगलकर कैसी तृप्ति की साँस ले रहा है।

प्रश्न-

(क) इस गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

(ख) आपकी दृष्टि में कौन कंडे की आगी में चीज भून रहा है?

(ग) बुढ़िया क्या कर रही है?

(घ) आग की वहक से बच्चे का चेहरा कैसा लग रहा है?

(ड.) गाँव की पृष्ठभूमि में कौन, कैसे मस्तक उठाए झूम रहे हैं?

(च) सूखे हुए नाले में कौन खड़ा है?

(छ) प्रकृति ने क्रूर मजाक किसके साथ किया है?

(ज) दस साल के बच्चे का व्यक्तित्व कैसा है?

(झ) शाश्वत-बुभुक्षा का अर्थ लिखिए।

(ञ) सड़क का दृश्य कैसा है?

(ट) सड़क के दृश्य का वर्णन करें।

(ठ) भुने हुए चीज की हिस्सेदारी कौन कौन लेना चाहते हैं?

प्रश्न 2. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उससे संबंधित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

ईश्वर का नाम 'दीनबंधु' है। यदि हम वास्तव में आस्तिक हैं, ईश्वर-भक्त हैं तो हमारा यह पहला धर्म है कि दीनों को प्रेम से गले लगाएँ, उनकी सहायता करें, उनकी सुश्रुषा करें। तभी तो दीनबंधु ईश्वर पर प्रसन्न होगा। पर ऐसा कब करते हैं? आज हम दीन-दुर्बलों को ठुकरा - ठुकरा कर ही आस्तिक या दीनबंधु भगवान के भक्त बन बैठे हैं। दीनबंधु की ओट में हम दीनों को खूब सता रहे हैं। कैसे अद्‌वितीय आस्तिक हैं हम! न जाने क्या समझकर हम अपने कल्पित ईश्वर का नाम दीनबंधु रखे हुए हैं, क्यों इस रद्‌दी नाम से उसका स्मरण करते हैं।

यह हमने सुना अवश्य है कि त्रिलोकेश्वर श्रीकृष्ण की मित्रता और प्रीति सुदामा नाम के एक दीन दुर्बल ब्राहमण से हुई थी। यह भी सुना है कि भगवान यदुराज ने महाराज दुर्योधन का अतुल आतिथ्य अस्वीकार कर बड़े प्रेम से गरीब विदुर के यहाँ साग-भाजी का भोग लगाया था। पर यह बात चित्त में बैठती नहीं है। रहा हो कभी ईश्वर का दीनबंधु नाम । पुरानी सनातनी बात है कौन काटे पर हमारा भगवान दोनों का भगवान नहीं है। हरे, हरे। यह उनकी घिनौनी कुटिया में रहने जाएगा? वह रत्न

जड़ित सिंहासन पर विराजने वाला ईश्वर उन भुक्खड़ कंगलों के कटे-फटे कम्बलों पर बैठने जाएगा? यह मालपुआ मोहनभोग पाने वाला भगवान उन भिखारियों की रूखी-सूखी रोटी खाने जाएगा? कभी नहीं हो सकता, हम अपने बनवाये हुए विशाल राज मंदिर में उन दीन दुर्बलों को आने भी न देंगे। दीन-दुर्बल भी कहीं ईश्वर भक्त होते हैं? किसानों और मजदूरों की टूटी-फूटी झोंपड़ियों में ही प्यारा गोपाल वंशी बजाता मिलेगा। वहाँ जाओ और उसकी मोहिनी दवि निरखो। जेठ - वैशाख की कड़ी धूप में, मजदूर के पसीने की टपकती हुई बूँदों में उस प्यारे राम को देखो। किसी धूल भरे हीरे की कजी में उस सिरनहार को देखो। जाओ पतित पददलित अछूत की छाया में उस लीला-बिहारी को देखो।

तुम न जाने उसे कहाँ खोज रहे हो। अरे भई, यहाँ वह कहाँ मिलेगा? इन मंदिरों में वह राम न मिलेगा। उन मस्जिदों में अल्लाह का दीदार होना मुश्किल है। इन गिरजों में कहाँ परमात्मा है। इन तीर्थों में मालिक रमने का नहीं। गाने-बजाने से भी वह रीझने का नहीं। अरे इन सब चटक-मटक में वह कहाँ? वह तो दुखियों की आह में मिलेगा। गरीबों की भूख में मिलेगा। दोनों के दुख में मिलेगा। सो तुम वहाँ खोजने जाते नहीं। यहाँ व्यर्थ फिरते हो।

प्रश्न:

(क) उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपर्युक्त शीर्षक लिखिए।

(ख) आस्तिक व्यक्ति का पहला धर्म क्या है?

(ग) दीनबंधु की ओट में हम क्या कर रहे हैं?

(घ) हमने क्या सुन रखा है?

(ङ) धनी लोग ईश्वर के बारे में क्या सोचते हैं?

(च) ईश्वर के दर्शन कहाँ हो सकते हैं?

(छ) ईश्वर कहाँ-कहाँ नहीं रहता?

(ज) दो व्यक्तिवाचक संज्ञाओं को छाँटकर लिखें।

खण्ड-ख रचना (15 अंक)

प्रश्न 3. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 200 शब्दों में निबंध लिखें :

(क) राष्ट्रीय एकता: -

(संकेत बिन्दु-अर्थ और महत्त्व, भारत में विभिन्नता, अनेकता में एकता, राष्ट्रीय एकता के बाधक तत्त्व, समाधान।)

(ख) समय का महत्त्व :-

(संकेत बन्दु-समय और अवसर कभी नहीं ठहरते, समय का सदुपयोग कैसे, दुरुपयोग के परिणाम, सफलता समय की दासी है।)

(ग) हमारा राज्य झारखंड :-

(संकत बिन्दु-परिचय, सीमा, निवासी, साधन, उपसंहार।)

प्रश्न 4. अपने प्रधानाचार्य को पत्र लिखकर अपना मासिक शुल्क कम करने प्रार्थना कीजिए।

अथवा

आपके क्षेत्र में कूड़े-कचरों की अधिकता हो गयी है। अतः स्वास्थ्य अधि कारी को उचित माध्यम से सफाई की व्यवस्था करने के लिये पत्र लिखिए।

खण्ड - ग : व्यावहारिक व्याकरण (15 अंक)

प्रश्न 5. वाक्य में प्रयुक्त क्रियापद छाँट कर भेदों के नाम लिखिए:

(i) छोटा बच्चा बहुत देर से रो रहा है।

(ii) महेन्द्र ने नरेन्द्र से चाय पिलवाई।

(iii) बच्चों को खेलने दो।

प्रश्न 6. रिक्त स्थानों की पूर्ति अव्यय पदों से कीजिए:

(i) खूब मन लगाकर पढ़ो ..... परीक्षा में प्रथम आ सको।

(ii) रमेश अब ..... पढ़ रहा है।

(iii) ..... ! कहाँ से बदबू आ रही है?

प्रश्न 7. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए:

(i) सूर्योदय होने पर उजाला फैल गया। (संयुक्त वाक्य में बदलें ।)

(ii) गाड़ी धीरे-धीरे चल रही है। (क्रिया विशेषण छाँटकर लिखें।)

(iii) शाम हुई और तारे निकले। (यह किस प्रकार का वाक्य है।)

प्रश्न 8. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए:

(i) सुरेश से दौड़ा नहीं जाता। (कर्तृवाच्य में बदलें)

(ii) लड़के से पढ़ा जाता है। (वाक्य किस वाच्य में है?)

(iii) सीता चल नहीं सकती। (भाववाच्य)

प्रश्न 9. (i) देशभक्ति' का समास विग्रह करके समास का नाम लिखें।

(ii) 'पत्र' के दो भिन्न अर्थ लिखें।

खण्ड घ : पाठ्य पुस्तकें (50 अंक)

प्रश्न 10. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

उज्जवल गाथा कैसे गाऊँ, मधुर चाँदनी रातों की ।

अरे, खिल खिला कर हँसते होने वाली उन बातों की ।

मिला कहाँ वह सुख जिसका मैं स्वप्न देखकर जाग गया।

आलिंगन में आते-आते मुसक्या कर जो भाग गया।

प्रश्न-

(क) कवि किस तरह के उज्ज्वल गाथा नहीं सुनना चाहता है?

(ख) 'स्वप्न देखकर जाग जाने से' कवि का क्या तात्पर्य है?

(ग) कवि ने चाँदनी रातों की गाथा को उज्ज्वल क्यों कहा है?

अथवा

ऊधो, तुम हो अति बड़भागी।

अपरस रहत सनेह लगा तैं नाहिन मन अनुरागी ।

मुरइनि पात रहते जल भीतर, ता रस देह न दागी।

ज्यौं जल माहँ तेल की गागरि, बूँद न ताकौं लागी।

प्रीति-नदी मैं पाऊँ न बोर्यौ, दृष्टि न रूप परागी ।।

'सूरदास' अवला हम भोरी, गुर चाँटी ज्यौं पागीं ।।

प्रश्न :-

(क) कवि तथा कविता का नाम लिखिए।

(ख) उद्धव के मन में अनुराग नहीं है, फिर भी गोपियाँ उन्हें बड़भागी क्यों कहती हैं?

(ग) उद्धव के व्यवहार की तुलना किस-किस से की गई है ?

प्रश्न 11. निम्न में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

(क) लक्ष्मण के स्वभाव की विशेषताएँ लिखें।

(ख) कवि ने 'श्री ब्रजदूलह' किसके लिये प्रयुक्त किया है और उन्हें संसार-रूपी मंदिर का दीपक क्यों कहा है?

(ग) कवि की आँख फागुन की सुन्दरता से क्यों नहीं हट रही है?

(घ) कवि ने कठिन यथार्थ के पूजन की बात क्यों कही है?

प्रश्न 12. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

(क) कवि नागार्जुन के अनुसार फसल क्या है?

(ख) अपने किसी मित्र की स्वभाव की विशेषताएँ लिखें।

अथवा

(क) माँ ने बेटी को क्या सीख दी ?

(ख) गापियों द्वारा उद्धव को भाग्यवान कहने में क्या व्यंग्य निहित है ?

प्रश्न 13. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर संबंधित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

इस तरह हमारे बीच से वह चला गया जो हम में से सबसे अधिक छायादार फल-फूल, गंध से भरा और सबसे अलग सबका होकर सबसे ऊँचाई पर मानवीय की दिव्य चमक में लहलहाता खड़ा था। जिसकी स्मृति हम सबके मन में, जो उनके निकट थे, किसी यज्ञ की पवित्र आग की आँच की तरह आजीवन बनी रहेगी। मैं उस पवित्र ज्योति की याद में श्रद्धानत हूँ।

प्रश्न :

(i) किसे सबसे अधिक, छायादार, फल-फूल भरा कहा गया है और क्यों?

(ii) मानवीय करुणा की दिव्य चमक लहलहाने वाला किसे कहा गया है और क्यों?

(iii) 'यज्ञ की पवित्र आग की तरह' कहने का क्या आशय है?

अथवा

"नवाब साहब ने सतृष्ण आँखों से नमक मिर्च के संयोग चमकती खीरे की फाँक उठाकर होठों तक ले गये, फाँक को सूँघा । स्वाद के आनंद में पलके मूँद गयीं। मुँह में भर आए पानी का घूँट गले से उतर गया। तब नवाब साहब ने फाँकों को खिड़की से बाहर छोड़ दिया। नवाब साहब खीरे की फाँकों को नाक के पास ले जाकर वासना से रसास्वादन कर खिड़की के बाहर फेंकते गये। नवाब साहब ने खीरे की सब फाँकों को खिड़की के बाहर फेंककर तौलिए से हाथ और होंठ पोछ लिये और गर्व से गुलाबी आँखों से हमारी ओर देख लिया, मानो कह रहे हों-यह है खानदानी रईसों का तरीका।" https://www.jharkhandboard.com

प्रश्न :

(i) नवाब साहब ने खीरे का स्वाद किस प्रकार लिया?

(ii) नवाब साहब किस कारण गर्व अनुभव कर रहे थे?

(iii) इस गद्यांश में किस घर व्यंग्य किया गया है?

प्रश्न 14. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(क) कैप्टन, मूर्ति का चश्मा क्यों बार-बार बदल देता है? पठित पाठ के आधार पर उत्तर दें?

(ख) भगत ने बेटे की मृत्यु पर अपनी भावनाएँ किस प्रकार प्रकट की?

(ग) फादर कामिल बुल्के के व्यक्तित्व को अपने शब्दों में लिखें।

(घ) शहनाई की दुनिया में डुमराँव को क्यों याद किया जाता है ?

प्रश्न 15. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(क) बालगोबिन भगत की दिनचर्या के लिये अचरज का कारण क्यों थी?

(ख) हालदार साहब हमेशा चौराहे पर रुकते और नेताजी को क्यों निहारते थे?

अथवा

(क) किन महत्त्वपूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये सूई-धागे का आविष्कार हुआ है?

(ख) बालगोबिन भगत ने पुत्र वधु के भाई को पुनर्विवाह का आदेश क्यों दिया?

प्रश्न 16. कभी खेत तो कभी रंगीन पताकाओं का फहराना किन अलग-अलग अवसरों की ओर संकेत करता है?

अथवा

हिरोशिमा की घटना विज्ञान का भयानकतम दुरुपयोग है। आपकी दृष्टि में विज्ञान का दुरुपयोग कहाँ-कहाँ किस तरह से हो रहा है?

प्रश्न 17. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर दीजिए:

(क) पूजा पाठ करने के बाद बाबूजी क्या करते थे?

(ख) प्रकृति ने जल संचय की व्यवस्था किस प्रकार की?

(ग) रात्रिकालीन गंतोक के सौन्दर्य का वर्णन अपने शब्दों में करें?

(घ) कठोर हृदय वाली दुलारी टुन्नू की मृत्यु पर क्यों विचलित हुई ?